भारतेंदु काल की वशेषताएँ

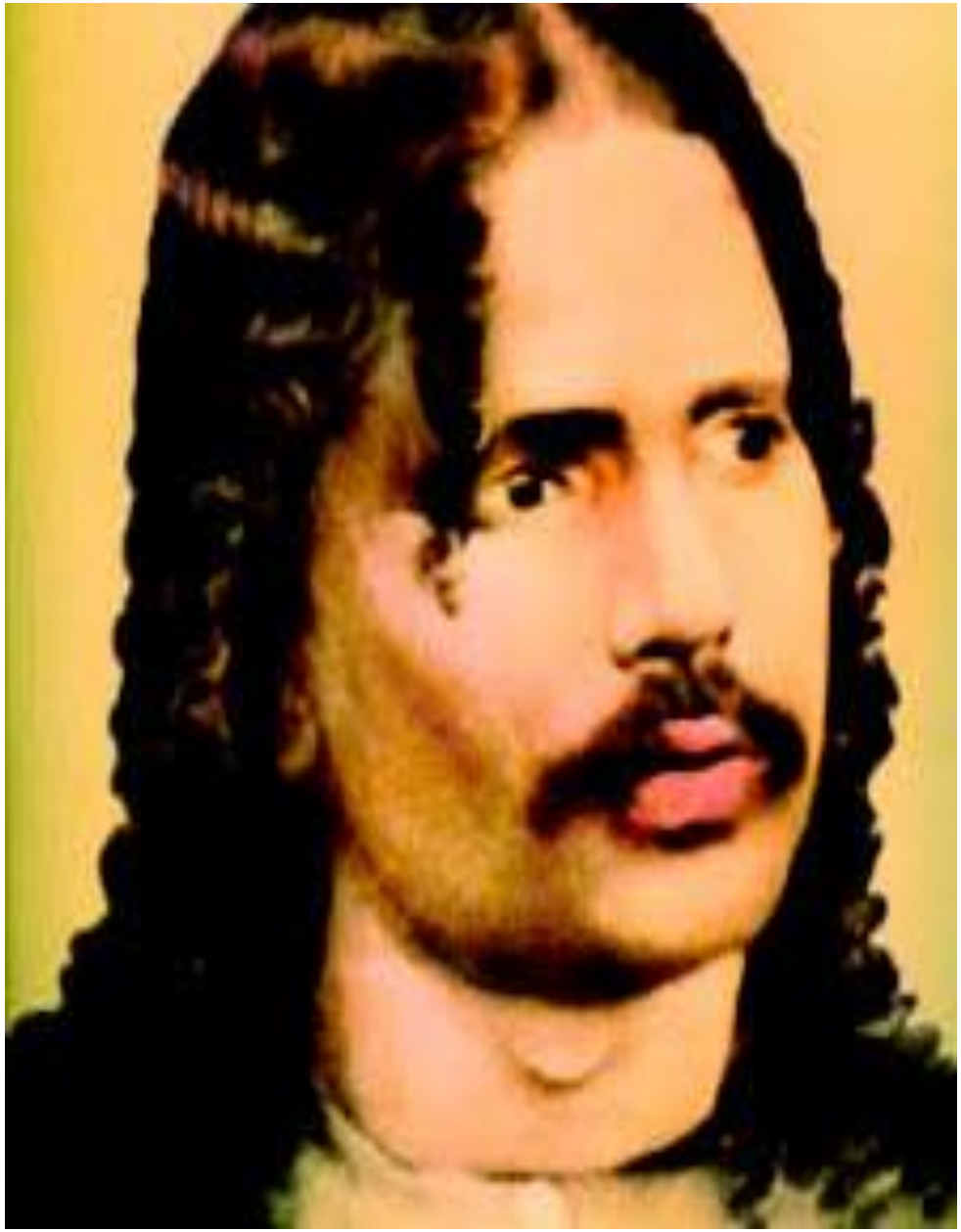

भारतेन्दु काल या नवजागरण काल (1869 से 1900)

हिंदी साहित्य के आधुनिक काल के संक्राति काल के दो पक्ष हैं। इस समय के दरम्यान एक और प्राचीन परिपाटी में काव्य रचना होती रही और दूसरी ओर सामाजिक राजनीतिक क्षेत्रों में जो स क्रयता बढ़ रही थी और परिस्थितियों के बदलाव के कारण जिन नये वचारों का प्रसार हो रहा था उनका भी धीरे-धीरे साहित्य पर प्रभाव पड़ने लगा था। प्रारंभ के 25 वर्षों (1843 से 1869) तक साहित्य पर यह प्रभाव बहुत कम पड़ा। कन्तु सन् 1868 के बाद नवजागरण के लक्षण अ धक स्पष्ट रूप से दिखाई देने लगे थे।

भारतेन्दु काल या नवजागरण काल (1869 से 1900)

वचारों में इस परिवर्तन का श्रेय भारतेन्दु हरिश्चन्द्र को है। इस लए इस युग को भारतेन्दु युग भी कहते हैं। भारतेन्दु के पहले ब्रज भाषा में भक्ति और श्रृंगार परक रचनाएँ होती थीं और लक्षण ग्रंथ भी लखे जाते थे। भारतेन्दु के समय से काव्य के वषय चयन में व्यापकता और व वधता आई।

श्रृंगारिकता, रीतिबद्धता में कमी आई। राष्ट्र-प्रेम, भाषा-प्रेम और स्वदेशी वस्तुओं के प्रति प्रेम क वयों के मन में भी पैदा होने लगा। उनका ध्यान सामाजिक समस्याओं और उनके समाधान की ओर भी गया। इस प्रकार उन्होंने सामाजिक राजनीतिक क्षेत्रों में गतिशील नवजागरण को अपनी रचनाओं के द्वारा प्रोत्साहित कया।

भारतेन्दु काल या नवजागरण काल (1869 से 1900)

भारतेंदु काल मे क वता के क्षेत्र मे ब्रजभाषा का प्रयोग एवं गदय के क्षेत्र मे खड़ी बोली का प्रयोग कया गया।खेड़ी बोली का वकास इस युग की महत्वपूर्ण घटना है। इस युग मे पत्रकारिता, उपन्यास, कहानी, नाटक आलोचना, निबंध आदि अनेक गदय वधाओं का वकास हुआ, जिसका माध्यय खड़ी बोली है। इस युग मे प्रत्येक लेखक कसी न कसी पत्रिका का सम्पादन करता था। भारतेन्दु युग मे जिन साहित्यिक रूपों और प्रव ृत्तयों का बीच बोया गया था, वह द् ववेदी युग मे खूब फला फूला।

भारतेन्दु काल या नवजागरण काल (1869 से 1900)

भारतेन्दु युग के क व एवं उनकी रचनाएं

1. भारतेंदु हरिश्चन्द्र = प्रेम-सरोवर, प्रेम-फुलवारी, वेणु-गीति,प्रेम-मल्लिका।

2. बद्रीनारायण चौधरी " प्रेमघन " = जीर्ण-जनपद, आनन्द-अरूणोदय, ला लत्य-लहरी।

3. प्रताप नारायण मश्र = प्रेम-पुष्पावली, मन की लहर, श्रंगार-वलास।

4. जगमोहन संह = प्रेम-सम्प त्त लता, देवयानी, श्यामा-सरोजिनी।

5. अम्बिका दत्त व्यास = भारत धर्म, हो हो होरी, पावस-पचासा।

6. राधाचरण गोस्वामी = नवभक्त माल।

अन्य क वयों में रामकृष्ण वर्मा, श्री निवासदास, लाला सीताराम, राय देवी प्रसाद, बालमुकुंद गुप्त, नवनीत चौबे आदि हैं।

भारतेंदु काल की वशेषताएँ

1. देश-भक्ति और राष्ट्रीय-भावना :

इस काल की क वता की मुख्य प्रवृति देश-भक्ति की है। **1857** के स्वतंत्रता संग्राम के बाद भारत का शासन कंपनी के हाथ ब्रिटिश सरकार ने ले लया था। जिससे जनता को शांति और सुरक्षा की आशा बँधी। इस लए क वता में राज-भक्ति का स्वर सुनाई पड़ता है। इसमें ब्रिटिश शासकों की गुलामी के साथ-साथ देश की दशा सुधारने की प्रार्थना भी है। जैसे,

करहु आज सों राज आप केवल भारत हित,

केवल भारत के हित साधन में दीजे चत। **(प्रेमघन)**

इस युग के क व देश की दयनीय दशा से उत्पन्न क्षोभ के कारण ईश्वर से प्राथना करते हैं-

कहाँ करुणानि ध केशव सोए?

जानत नाहिं अनेक जतन करि भारतवासी रोए।**(भारतेन्दु)**

तो कहीं-कहीं उन्होंने ब्रिटिश साम्राज्यवादी नीति के प्रति असंतोष व्यक्त करते हुए स्वतंत्रता का महत्व बताया है-

सब तजि गहौ स्वतंत्रता, नहिं चुप लातै खाव।

राजा करै सो न्याव है, पाँसा परे सो दाँव।।

भारतेंदु काल की वशेषताएँ

2. जनवादी वचारधाराः

भारतेन्दु युगीन क वता की दूसरी प्रमुख वशेषता है- जनवादी वचारधारा। डॉ. राम वलास शर्मा के मतानुसार भारतेन्दु युग की जनवादी भावना उसके समाज-सुधार में समायी हुई है। इस युग का साहित्य भारतीय समाज के पुराने ढाँचे से संतुष्ट न होकर उसमें सुधार चाहता था। इस युग के क वयों ने समाज के दोष युक्त अंग की आलोचना की है-

निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल।

भारतेन्दु मेम-मेहरानी के बारे में कहते हैं-

का भवा, आवा है ए राम जमाना कैसा।

कैसी महरारू है ई, हाय जमाना कैसा।

भारतेंदु काल की वशेषताएँ

2. जनवादी वचारधाराः

भारतेन्दु युगीन क वता में सांप्रत समाज की दशा का, वदेशी सभ्यता के सँकट का, पुराने रोजगार के बहिष्कार का स्वर दिखाई देता है।

इस युग में दो वचार-धाराएँ दिखाई देती हैं-

1.पुराणवादी परंपरा के समर्थकों की

2. आधुनिक व्यापक दृष्टि वालों की

कन्तु भारतेन्दु ने मध्यम मार्ग अपनाया था। भारतेन्दु ने सामाजिक दोषों, रूढ़ियों, कुरीतियों का घोर वरोध कया है। उन्होंने धर्म के नाम पर होने वाले ढोंग की पोल खोल दी है। छुआछूत के प्रचार के प्रति क्षोभ के स्वर क व में हैं। प्रतापनारायण मश्र स्त्रियों की शक्षा के पक्षपाती हैं, बाल- ववाह के वरोधी तथा

भारतेंदु काल की वशेषताएँ

3. प्राचीन परिपाटी की क वता:

भक्ति और श्रृंगार- इस युग में प्राचीन परिपाटी का क वता का सृजन हुआ था। भक्ति और श्रृंगार की परंपराएं इस युग तक चलती रही, परिणाम भारतेन्दु तथा अन्य क वयों ने इसका अनुसरण कया। कुछ क वयों ने नख- शख वर्णन कया तो कुछ ने दान-लीला, मृगया की रीतिकालीन पद्धति अपनायी। इस प्रकार इस युग की क वता में भक्ति, श्रृंगार एवम् प्रेम-वर्णन के सुंदर नमूने मलते हैं। जैसे,भक्ति-वर्णन- ब्रज के लता पता मोहि कीजै।

गोपी पद पंकज पावन की रव जायैं सर धीजै।। (भारतेन्दु)

श्रृंगार-वर्णन- साजि सेज रंग के महल में उमंग भरी।

पय गर लागी काम-कसक मटायें लेत।

उन्होंने रीति कालीन आचार्यों की तरह स्वरति, समरति, चत्ररति, वस्त्ररति, पपड़ीपन आदि यौन- वकृतियों के चत्र व र्णत कये हैं।

प्रेम-वर्णन- सखी ये नैना बहुत बुरे।

तब सों भये पराये, हरि सों जब सों जाइ जुरे।।

मोहन के रस बस ह्वै डोलत तलफत तनिक बुरे।।

भारतेंदु काल की वशेषताएँ

4. कलात्मकता का अभावः

भारतेन्दु युगीन क वता की चौथी मुख्य प्रव ृत्त है- कलात्मकता का अभाव। नवयुग की अ भव्यक्ति करने वाली यह क वता कलात्मक न हो सकी। जिसके कारण हैं- **1.** इस काल में वचारों का संक्रांति काल था जिसके कारण में इसमें कलात्मकता का अभाव रहा। **2.** इस युग में क व समाचार-पत्रों दवारा अपनी क वता का प्रचार करते थे, इस लए उन्हें इसे काव्यपूर्ण बनाने की चंता नहीं थी। **3.** भाषा का अस्तित्व और नागरी आंदोलन के कारण भी क वता कलात्मकता धारण न कर सकी। क्यों क इस आंदोलन के लए क वयों को जनमत जागरित करना था जो क जनवाणी से ही संभव था कहने का मतलब यह है क इस युग के क व तत्कालीन राजनीतिक, सामाजिक, आ थक, सांस्कृतिक, धा मक एवम् भाषा संबंधी समस्याओं में इतने व्यस्त थे क वे नवयुग की चेतना को कलात्मक एवम् प्रभावशाली ढंग से अ भव्यक्त न कर सके और उसमें सर्वत्र यथार्थ की अनुभूति की सच्चाई सरल भाषा-शैली में अ भव्यक्त हुई। जैसे,

खंडन-मंडन की बातें सब करते सुनी सुनाई।

गाली देकर हाय बनाते बैरी अपने भाई।।

हैं उपासना भेद न उसके अर्थ और वस्तार।

सभी धर्म के वही सत्य सद्धांत न और वस्तारो।।

भारतेंदु काल की वशेषताएँ

5. काव्य में ब्रजभाषा का प्रयोगः

इस काल की भाषा प्रमुख रूप से ब्रज ही रही। खड़ीबोली गद्य तक ही रही थी। कन्तु इस युग के अंतिम दिनों में खड़ीबोली में क वता करने का आंदोलन प्रारंभ हो गया था। जिसके कारण द् ववेदी युग में क वता के क्षेत्र में खड़ीबोली का प्रयोग शुरू हो जाता है। बद्रीनारायण चौधरी, अंबिकादत्त व्यास, प्रतापनारायण मश्र आदि क वयों ने भारतेन्दु काल में खड़ीबोली में क वता करने का प्रयास कया था। जैसे-

हमें जो हैं चाहते निबाहते हैं प्रेमघन,

उन दिलदारों से ही,मेल मला लेते हैं। (प्रेमघन)

भारतेन्दु की खड़ी बोली का एक उदाहरण देखें-

साँझ सबेरे पंछी सब क्या कहते हैं कुछ तेरा है।

हम सब एक दिन उड़ जायेंगे यह दिन चार सबेरा है।।

इससे स्पष्ट है क भारतेन्दु युग में खड़ी बोली में उच्चकोटि की रचना नहीं मलती। इसका कारण स्पष्ट है क इस युग ब्रज भाषा पर रिझे हुए थे। इस प्रकार भाव-व्यंजना का प्रधान माध्यम ब्रजभाषा ही रही।

भारतेंदु काल की वशेषताएँ

6. हास्य-व्यंग्य एवम् समस्या पूर्तिः

इस युग में हास्य-व्यंग्यात्मक क वताएँ भी काफी मात्रा में लेखी गई। सामाजिक कुरीतियों और अंध वश्वासों तथा पाश्चात्य संस्कृति पर करारे व्यंग्य कए गए। इस दृष्टि से प्रेमघन और प्रतापनारायण मश्र की रचनाएँ सर्वोत्तम हैं।

समस्या-पूर्ति इस युग की काव्य-शैली थी और उनके मंडल के क व व वधै वषयों पर तत्काल समस्यापूर्ति कया करते थे। रामकृष्ण वर्मा, प्रेमघन, ब्रेनी ब्रज ओदि क व तत्काल समस्या-पूर्ति के लए प्र सद्ध थे।

भारतेंदु काल की वशेषताएँ

7. प्राचीन छंद-योजनाः

भारतेन्दु युग में क वयों ने छंद के क्षेत्र में कोई नवीन एवम् स्वतंत्र प्रयास नहीं कया। इन्होंने परंपरा से चले आते हुए छंदों का उपयोग कया है। भक्ति और रीति काल के क वत्त, सवैया, रोला, दोहा, छप्पय आदि छंदों का इन्होंने प्रयोग कया। जब क जातीय संगीत का सादारम लोगों में प्रचार करने के लए भारतेन्दु ने कजली, ठुमरी, खेमटा, कहरवा, गज़ल, श्रद्धा, चैती, होली, सांझी,लावनी, बिरहा, चनैनी आदि छंदों को अपनाने पर जोर दिया था।

इस प्रकार यह स्पष्ट है क इस युग में परंपरा और आधुनिकता का संगम है। क वता की दृष्टि से यह संक्रमण का युग था। क वयों के वचारों में परिवर्तन हो रहा था। परंपरागत संस्कारों का पूर्ण रूप से मोहभंग हुआ भी न था और साथ में नवीन संस्कारों को भी वे अपना रहे थे। कोशी नवजारण का प्रमुख केन्द्र था और यहां का साहित्यिक परिवेश भी सर्वा धक जागरूक था। तत्कालीन परिवर्तनशील सामाजिक मूल्यों का भी उन पर प्रभाव पड़ रहा था।

इस युग की अ धकांश क वता वस्तुनिष्ठ एवम् वर्णनात्मक है। छंद, भाषा एवम् अ भव्यंजना पद्धति में प्राचीनता अ धक है, नवीनता कम। खड़ी बोली का आंदोलन प्रारंभ हो चुका था कन्तु क वता के क्षेत्र में ब्रज ही सर्वमान्य भाषा रही।